

91 फीसदी युवा भूलने को बीमारी नहीं मानते ; 85 फीसदी को अल्जाइमर्स के बारे में कोई जानकारी नहीं

नई दिल्ली, 3 अप्रैल, 2017: वर्ल्ड अल्जाइमर रिपोर्ट 2015-द ग्लोबल इंपैक्ट के मुताबिक आज 4.6 करोड़ से भी अधिक लोग डिमेंशिया से पीड़ित हैं और 2050 तक यह संख्या 13.15 करोड़ तक पहुंच जाएगी। सिर्फ तीन वर्षों की अवधि में डिमेंशिया पर होने वाला खर्च 1 लाख करोड़ डॉलर तक पहुंच जाएगा। 41 डिमेंशिया मरीजों की संख्या के साथ सबसे आगे 10 देशों में से भारत तीसरे पायदान पर है। 2050 तक डिमेंशिया से पीड़ित लोगों में से 68 फीसदी निचले और मध्यम आय समूहों के होंगे इसलिए युवाओं के बीच इसकी समझ के बारे में जानना महत्वपूर्ण है।

प्रश्नोत्तर को डॉ. माधुरी बेहारी, सलाहकार, न्यूरोलॉजी, फोर्टिस प्लाइट लेपिटनेट राजन ढल हॉस्पिटल, वसंत कुंज (एफएचवीके) ने तैयार किया जिसे भारत के युवाओं के बीच अल्जाइमर्स और डिमेंशिया की समझ के बारे में जानने के लिए वितरित किया गया। नमूना उत्तरों को दिसंबर 2016-जनवरी 2017 के बीच 15 से 40 वर्ष के उम्र के लोगों के बीच से जुटाया गया और मिली जानकारियां ये हैं:

- 91 फीसदी युवा भूलने की आदत को बीमारी नहीं मानते हैं
- 85 फीसदी अल्जाइमर को एक बीमारी के तौर पर नहीं जानते हैं
- 82 फीसदी ने कहा ना-क्या डायबिटीज डिमेंशिया से पहले की अवस्था है
- 72 फीसदी ने कहा ना-क्या आप जानते हैं कि एल्कोहॉल की आदत डिमेंशिया से पहले की अवस्था है
- 90 फीसदी ने कहा ना-क्या आप जानते हैं कि बार-बार स्ट्रोक से यादाश्त को नुकसान हो सकता है
- 97 फीसदी लोगों को डिमेंशिया के कारणों के बारे में नहीं पता
- 91 फीसदी नहीं जानते हैं कि डिमेंशिया दोबार भी हो सकता है
- आमतौर पर लोगों डिमेंशिया ग्रस्त लोगों के लिंग और आयु समूह के बारे में भी जानकारी नहीं है

डॉ. बेहारी के मुताबिक, "भारत में हर मिनट किसी को डिमेंशिया होता है और इनमें से किसी को भी इसका इलाज नहीं मिलता है। डिमेंशिया के उपचार पर होने वाला सीधा खर्च डायबिटीज, हाइपरटेंशन और कैंसर से अधिक हो सकता है। एक मरीज को इस बीमारी से पार पाने के लिए न सिर्फ दवाओं की जरूरत होती है बल्कि परिवार के सदस्यों द्वारा उचित देखभाल की भी जरूरत होती है। वे अपने अस्तित्व के लिए अपने परिवार के सदस्यों पर अधिक निर्भर हो जाते हैं। इसकी शुरुआत मामूली रूप से भूलने से होती है और एक ऐसी स्थिति तक पहुंच जाता है जहां एक व्यक्ति अपने करीबी लोगों को भी नहीं पहचान पाता है। देखने और बोलने की यादें खत्म हो जाना जैसे चीजों का खो जाना और जानी पहचानी जगहों का रास्ता भूलना सामान्य बात है। ऐसी स्थिति की कल्पना कीजिए जब आपकी उम्र 60 या 70 वर्ष हो और बाजार से अपने घर का रास्ता भूल जाएं या खुद को अजीब स्थिति में पाएं।"

लक्षण धीरे-धीरे दिखाई देते हैं और धीरे-धीरे बढ़ते हैं। ज्यादातर लोगों में इसकी शुरुआत यादाश्त में गड़बड़ी और खास तौर हाल ही में घटनाओं यानी उसी दिन हुई घटनाओं को भूलने से हो सकती है जैसे उन्होंने क्या खाया था या वे कहाँ गए थे। कुछ अन्य मरीज शब्दों को याद नहीं कर पाते हैं जो वे बोलना चाहते हैं या फिर उन्हें यह याद नहीं रहता है कि वे किस संदर्भ में बात करना चाहते हैं या फिर शब्दों का सही उच्चारण, कुछ मरीज यह नहीं समझ पाते हैं कि क्या कहना है। कुछ

अन्य मरीजों को घर के भीतर या बाहर जाने का रास्ता याद नहीं रहता है और वे गुम हो जाते हैं। वे शौचालय समझकर रसोईघर में चले जाते हैं, बगैर समझे पेशाब कर देते हैं या उन्हें समय का पता नहीं चलता है, वे यह सोचकर जल्दी उठ जाते हैं कि सुबह हो गई है और वे उठकर नहा लेते हैं। उन्हें पता नहीं होता है कि कपड़े कैसे पहनने चाहिए और अपने रिश्तेदारों को भी नहीं पहचान पाते हैं। उनके लिए वक्त ठहर जाता है। जब बीमारी की शुरुआत होती है तो वे सोचते हैं कि वे वहीं हैं जो वे थे। इसलिए वे यह सोच सकते हैं कि वे सिर्फ 40 वर्ष के हैं और उनकी पत्नी जिनकी उम्र बढ़ चुकी है, उन्हें मरीज अजनबी समझने लगता है।

इन जानकारियों के बारे में श्री संदीप गुडरू, फेसिलिटी डायरेक्टर, एफएचवीके ने कहा, "2015 में जहां एशिया में यह संख्या 2.29 करोड़ थी जो 2030 में 3.85 करोड़ तक और 2050 में 6.72 करोड़ तक पहुंच जाएगी। आज जी20 देशों में 80 फीसदी से अधिक लोग डिमेंशिया से पीड़ित हैं, भारत में अल्जाइमर्स के मरीजों की संख्या 2030 तक दोगुनी हो जाने की आशंका है और इस पर होने वाला खर्च तीन गुना तक बढ़ जाएगा। इस अध्ययन का उद्देश्य डिमेंशिया कार्यक्रम के संपूर्ण विकास के लिए एक आधार तैयार करना है। सरकार और निजी क्षेत्र के लोगों द्वारा एक ऐसा कार्यक्रम विकसित करने की तत्काल जरूरत है जहां डिमेंशिया की देखभाल से जुड़ा कार्यक्रम विकसित किया जाएगा।

दिमाग में पैदा होने वाली गड़बड़ियों से बचने के लिए ब्रेन टीजर्स, सुडोकू और अन्य पजल्स जैसी बौद्धिक गतिविधियों के रूप में दिमाग का इस्तेमाल करते रहना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। इसके अलावा लोगों के लिए दिमाग से जुड़े गेम्स और दिमाग के लिए गतिविधियां करते रहना भी जरूरी है। यह कहा जाता है, "इस्तेमाल करें या भूल जाएं सदा के लिए" यानी यूज़ इट ऑर लूज़ इट।"

फोर्टिस फ्लाइंट लेपिटनेंट राजन ढल अस्पताल के बारे में

फोर्टिस फ्लाइंट लेपिटनेंट राजन ढल अस्पताल, वसंत कुंज 150 बिस्तरों की सुविधा वाला एनएबीएच मान्यता प्राप्त मल्टी-स्पेशलिटी, टर्शियरी केयर अस्पताल है जहां व्यापक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं। अस्पताल भारत में वर्ल्ड क्लास इंटीग्रेटेड हेल्थकेयर डिलीवरी सिस्टम तैयार करने की फोर्टिस हेल्थकेयर की दूरगामी सोच का परिणाम है। प्रीवेंटिव हेल्थ तथा इमरजेंसी सेवाओं के क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं तथा अत्याधुनिक उपचार टैक्नोलॉजी समेत अस्पताल में सभी कुछ उपलब्ध है। इसकी हेल्थकेयर टीम में देश-विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों के स्वास्थ्य पेशेवर शामिल हैं जो संपूर्ण एवं दयाभाव के साथ मरीजों की देखभाल के लिए समर्पित हैं।

फोर्टिस हेल्थकेयर लिमिटेड के बारे में

फोर्टिस हेल्थकेयर लिमिटेड भारत में अग्रणी एकीकृत स्वास्थ्य सेवा प्रदाता है। कंपनी की स्वास्थ्य सेवाओं में अस्पतालों के अलावा डायग्नॉस्टिक एवं डे केयर स्पेशलिटी सेवाएं शामिल हैं। फिलहाल कंपनी भारत समेत दुबई, मॉरीशस और श्रीलंका में 45 हेल्थकेयर सुविधाओं (इनमें वे परियोजनाएं भी शामिल हैं जिन पर फिलहाल काम चल रहा है), करीब 10,000 संभावित बिस्तरों और 346 डायग्नॉस्टिक केंद्रों का संचालन कर रही है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें :

फोर्टिस हेल्थकेयर लिमि	एवियन मीडिया
अजेय महाराज: +91 9871798573 ; ajey.maharaj@fortishealthcare.com	रिशू सिंह: +91-9958891501 ; rishu@avian-media.com
तनुश्री रॉय चौधरी: +91 9999425750 tanushree.chowdhury@fortishealthcare.com	प्रीति सहरावत: +91- 9711170599 ; preeti@avian-media.com
प्रीति श्रीवास्तव: +9109910605271 Ms.priti@fortishealthcare.com	